आज 7 जुलाई 2015

उत्पादन बढ़ा पर चीनी के मूल्यों में कमी चिंता का विषय

देश में चीनी की रिकवरी में सिर्फ दस प्रतिशत, जबकि ब्राजील की 14.6 प्रतिशत

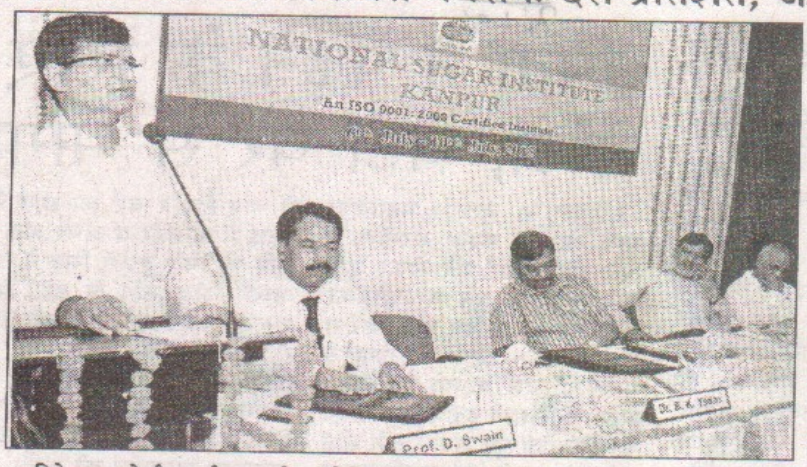

रिफ्रेशर कोर्स कार्यक्रम को संबोधित करते प्रबंध निदेशक डा. बी. के. यादव।

कानपुर, 6 जुलाई। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान कानपुर में आयोजित पांच दिवसीय रिफ्रेशर कोर्स कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए उ.प्र. सहकारी चीनी मिल संघ लखनऊ के प्रबंध निदेशक डा. बी. के. यादव ने चीनी के लगातार अधिक उत्पादन से इसके मूल्यों में कमी पर चिन्ता व्यक्त की। उन्होंने तकनीकि के विकास के साथ गन्ने के परिरक्षण एवं अन्य वैल्यू एडेड उत्पादों के उत्पादन की बात दोहरायी। एनएसआई के निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने घरेलू व वैश्विक चीनी परिदृश्य पर प्रकाश डालते हुए बताया कि मुख्य चीनी उत्पादक देशों की औसत चीनी परता (रिकवरी) भारत की तुलना में बहुत अधिक है। ब्राजील में १४.६ प्रतिशत, आस्ट्रेलिया में १३.५ प्रतिशत, दक्षिण अफ्रीका में १२.२ प्रतिशत, थाईलैण्ड में ११.३ प्रतिशत है। जबकि भारत में केवल १० प्रतिशत है। जिसका मुख्य कारण गन्ने की खराब गुणवत्ता, उत्पादकता तथा गन्ने में चीनी की माला का कम होना है। क्योंकि यहां चीनी की उत्पादकता प्रति ७ टन आती है जबकि ब्राजील व आस्ट्रेलिया में ११ टन है। हमारे किसानों व मिल मालिकों को गन्ने की उत्पादकता बढ़ाने हेतु एक मिशन मोड में काम करने की आवश्यकता है। उन्होंने बताया कि यहां पर सालभर में ४-५ महीने ही चीनी मिले चलती है। मिलों में उपलब्ध बुनियादी सुविधाओं का उपयोग कर हम खादय प्रसंस्करण इकाई के रुप में ला सकते हैं। डीएमएसआरडीई कानपुर के निदेशक डा.अरविंद कुमार सक्सेना, डा. जी.एस.सी. राव, डा. सी.एस.भट्ट, डा. संतोष कुमार, डा. आशुतोष बाजपेयी आदि ने अपने व्याख्यान दिये।

हिन्दुस्तान 7 जुलाई 2015

चाय कम, चॉकलेट में ज्यादा खा रहे चीनी

कानपुर | वरिष्ठ संवाददाता

एनएसआई में कार्यक्रम का शुभारंभ करते डीएमएसआरडीई के निदेशक डॉ. अरविन्द सक्सेना।

देश में चीनी से जुड़ी नीतियां तैयार करने और शिक्षण प्रशिक्षण क्षेत्र के शीर्ष संस्थान नेशनल शुगर इन्स्टीट्यूट (एनएसआई) अब डीएमएसआरडीई के साथ मिलकर शोध को गति देगा। देश में लगातार छठे वर्ष चीनी के अधिक उत्पादन और कम खपत से आर्थिक असन्तुलन की स्थिति पैदा हो गई है। इसे बचाने के लिए भी चीनी से जुड़ी शीर्ष संस्थाओं ने अनेक विकल्प सुझाए हैं।

एनएसआई में सोमवार से शुरू हुए पांच दिवसीय रिफ्रेशर कोर्स का उद्घाटन डीएमएसआरडीई के निदेशक डॉ. अरविन्द कुमार सक्सेना, उत्तर प्रदेश सहकारी चीनी मिल संघ, लखनऊ के प्रबंध निदेशक डॉ. बीके यादव, एन्वॉयरेंमेंटल इम्पैक्ट असेसमेंट अथॉर्टी, यूपी के चेयरमैन डॉ. सीएस भट्ट, शुगर टेक्नालॉजिस्ट एसोसिशन ऑफ इण्डिया के अध्यक्ष डॉ. जीएससी राव और एनएसआई के निदेशक प्रोफेसर नरेन्द्र मोहन ने किया।

डीएमएसआरडीई के साथ बढ़ेगा शोध : डीएमएसआरडीई के निदेशक ने कहा कि उनके संस्थान में ऐसे तमाम शोध हो रहे हैं जो एनएसाई के लिए फायदेमन्द हो सकते हैं। अगर दोनों संस्थाएं आपस में मिलकर कुछ बिन्दुओं पर शोध करें तो इससे जुड़ी अनेक समस्याओं का हल निकल सकता है।

शुगर टेक्नालॉजिस्ट एसोसिशन ऑफ इण्डिया के अध्यक्ष डॉ. जीएससी राव ने कहा कि कोल्डड्रिंक्स, चॉकलेट, बिस्कुट और दवाओं में कुल उत्पादन की 70 फीसदी से ज्यादा खपत होती है। इसे तैयार करने वाली कम्पनियां साधारण दाम में सीधे चीनी मिलों से शक्कर की खरीदारी करती हैं और अपने उत्पाद महंगे में बेचती हैं। बेहतर हो कि ब्रांडेड चीनी मिलों से ही पैक कर बाजार में लाई जाए। फिलहाल केवल चार रुपए प्रति किलो के लाभ के लिए चीनी मिलें परेशान हैं जबकि इसी चीनी को पैक कर बेचने या कॉमर्शियल इस्तेमाल करने वाली कम्पनियां करोड़ों का लाभ कमा रही हैं।

दो तरह की दरें जरूरी : एनएसआई के निदेशक प्रोफेसर नरेन्द्र मोहन ने कहा कि लगातार पिछले छह बरस से अधिक उत्पादन और कम खपत के साथ चीनी के कम दामों ने शुगर फैक्ट्रियों की रीढ़ तोड़ दी है। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान (एनएसआई) अब ऐसी नीति तैयार कर रहा है जिससे चीनी के दाम साधारण उपभोक्ता और कॉमर्शियल इस्तेमाल के अलग-अलग हों। गन्ने से 30 फीसदी चीनी और 70 फीसदी से ऐथनॉल तैयार किया जाए ताकि मध्य एशियाई देशों में अगर कोई संकट आता है तो हम ब्लेंडेड पेट्रोल से अपने को सन्तुलन में रख सकें।

अमर उजाला 7 जुलाई 2015

एनएसआई का रिफ्रेशर कोर्स शुरू

कानपुर। नेशनल शुगर इंस्टीट्यूट (एनएसआई) का पांच दिवसीय (6-10 जुलाई) रिफ्रेशर कोर्स सोमवार से शुरू हो गया। इसका उद्घाटन यूपी कोआपरेटिव शुगर फेडरेशन लिमिटेड के एमडी डॉ. बीके यादव ने किया। साथ ही कहा कि गन्ना की पैदावार और चीनी उत्पादन बढ़ाने की चुनौती विज्ञानियों को स्वीकार करनी पड़ेगी। इस दौरान एनएसआई के निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने कहा कि चीनी उत्पादन बढ़ाने की दिशा में काम चल रहा है। सब कुछ ठीक ठाक रहा तो अच्छा रिजल्ट आएगा। इस मौके पर डीएमएसआरडीई के डायरेक्टर डॉ. अरविंद कुमार सक्सेना, इनवायरमेंट इंपैक्ट एसेसमेंट अथारिटी के चेयरमैन सीएस भट्ट, शुगर टेक्नोलॉजिस्ट एसोसिएशन ऑफ इंडिया के प्रेसीडेंट डॉ. जीएससी रॉव और डॉ. संतोष कुमार मौजूद रहे।

राष्ट्रीय सहारा 7 जुलाई 2015

चीनी मिलें दें अन्य मूल्यवर्द्धित उत्पादों पर जोर

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में सेमिनार को संबोधित करते निदेशक नरेंद्र मोहन। फोटो : एसएनबी

कानपुर(एसएनबी)। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान (एनएसआई) में चीनी उद्योग से सम्बद्ध तकनीशियनों व अधिकारियों के लिए पांच दिवसीय रिफ्रेशर कोर्स की शुरूआत की गयी। इस मौके पर यूपी कोआपरेटिव सुगर फैक्ट्रीज फेडरेशन लि. के एमडी डा.बीके यादव ने चीनी मिलों को चीनी उत्पादन के अलावा अन्य मूल्यवर्द्धित उत्पादों के उत्पादन को भी गति देने की बात कही।

एनएसआई के निदेशक डा.नरेन्द्र मोहन ने चीनी उत्पादन औसत में भारत को अन्य देशों के मुकाबले काफी पीछे बताया। उन्होंने कहा कि चीनी मिलों में मुख्यतः चार-पांच महीने ही काम होता है। उन्होंने सुझाव दिया कि चीनी मिलों को एग्री बिजनेस काम्प्लेक्स के रूप में विकसित कर कारोबार को नया विस्तार दिया जा सकता है। उत्पादित चीनी के 70 प्रतिशत भाग का उपयोग विभिन्न उत्पाद बनाने वाले थोक निर्माता करते है। ऐसे में उन्होंने कामर्शियल व डोमेस्टिक एलपीजी सिलेंडर के तर्ज पर चीनी के भी दो दाम रखे जाने की सिफारिश की। इससे आमजनों को राहत के साथ ही चीनी मिलों को भी ज्यादा दाम मिलने से संजीवनी मिलेगी। रिफ्रेशर कोर्स कार्यशाला के उद्घाटन कार्यक्रम को डीएमएसआरडीई के निदेशक डा.एके सक्सेना, इन्वायरन्मेंट असेसमेंट अथारिटी यूपी के चेयरमैन डा.डीसी भट्ट, द सुगर टेक्नालाजिस्ट एसोसिएशन आफ इंडिया के प्रेसिडेंट डा.जीएससी राव ने भी संबोधित किया। कार्यशाला में चीनी उद्योग से सम्बद्ध करीब पांच दर्जन तकनीशियन व अधिकारी भागीदारी कर रहे हैं।

i next 7 जुलाई 2015

शुगर केन की क्वालिटी सुधारनी होगी

नेशनल शुगर इंस्टीट्यूट में एक्सपर्ट जुटे

kanpur@inext.co.in

KANPUR (6 July): शुगर केन में मिठास का कम होना चिंता का विषय है. इसकी क्वालिटी को सुधारने के लिए शुगर फैक्ट्री मालिकों के साथ इसकी खेती करने वाले किसानों को भी मिलकर काम करना होगा. शुगर के रेट्स एलपीजी गैस के अनुसार डिसाइड किए जाने चाहिए. घर में यूज होने वाली चीनी का रेट अलग हो और इंडस्ट्री में यूज होने वाली चीनी के रेट कमर्शियल होने चाहिए. यह विचार रिफ्रेशर कोर्स के इनॉग्रेशन मौके पर नेशनल शुगर इंस्टीट्यूट के डायरेक्टर प्रो. नरेन्द्र मोहन ने व्यक्त किए.

चीनी के गिरते रेट्स चिंता का विषय

रिफ्रेशर कोर्स का इनॉग्रेशन चीफ गेस्ट यूपी शुगर फैक्ट्री फेडरेशन के एमडी डॉ. वीके यादव ने दीप जलाकर किया. डॉ. यादव ने कहा कि चीनी के रेट अधिक प्रोडक्शन होने की वजह से लगातार गिर रहे हैं. यह चिंता का विषय है. टेक्नोलॉजी डेवलप करने के साथ साथ शुगर केन के जूस को प्रिजर्व कर मार्केट में बेंचने की रणनीति पर काम शुरू होना चाहिए.

वैकल्पिक टेक्नोलॉजी

डॉ. संतोष कुमार ने एल्कोहल को बनाने की वैकल्पिक टेक्नोलॉजी के बारे में विस्तार से जानकारी दी. उन्होंने कसाबा, चुकंदर, मीठी चरी के साथ साथ राइस से एल्कोहल बनाने के बारे में जानकारी दी. इस प्रोग्राम में चीनी मिल के चीफ इंजीनियर व चीफ केमिस्ट ने शिरकत की.